



दिल्ली पब्लिक स्कूल, गांधीनगर

शैक्षिक सत्र २०२१-२२

विषय: काव्य लेखन	दिनांक : ०४ /०८ / २०२१
स्थान: ऑनलाइन	कक्षा : ०४

**हिंदी किसी संप्रदाय विशेष की भाषा नहीं, यह जन- जन की भाषा है।**

**हिंदी हमारे हृदय की भाषा है।**

**लोगों को आकर्षित करती है हिंदी की मधुरता ,**

**विश्व की सबसे बड़ी भाषा है हिंदी।**

जैसा कि आप जानते हैं, प्रतिवर्ष १४ सितम्बर को हिंदी दिवस मनाया जाता है। दिल्ली पब्लिक स्कूल गांधीनगर में हिंदी दिवस बड़े उत्साह से ऑनलाइन आयोजित किया गया। हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में कक्षा ४ के विद्यार्थियों के लिए ऑनलाइन काव्य लेखन गतिविधि का आयोजन किया गया जिसका शीर्षक **प्रकृति का संदेश** था। जिसमें विद्यार्थियों पूरे जोश और उत्साह के साथ बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया।

**काव्य लेखन गतिविधि का उद्देश्य:-**

- छात्रों को उनकी समझ का प्रदर्शन करने के लिए एक जगह प्रदान करना था।
- विद्यार्थियों को प्रकृति और मनुष्य के बीच गहरा संबंध बताना।
- शिक्षा के साथ-साथ खुशियाँ प्रदान करना।
- काव्य लेखन की अनूठी विशेषताओं को पहचानें।
- लय,तुकबंदी और वर्णनात्मक शब्दावली जैसे काव्य लेखन कौशल का अभ्यास।

**वक्ताओं की ताकत भाषा, लेखक का अभिमान है भाषा,**

**भाषाओं के शीर्ष पर बैठी मेरी प्यारी हिंदी भाषा।**

हिंदी भाषा के प्रति विद्यार्थियों की रुचि को बढ़ाने के लिए काव्य लेखन एक मज़बूत हथियार है। सभी प्रतिभाशाली छात्रों ने बहुत अपने विचारों को प्रस्तुत किया और एक अद्भुत कौशल का प्रदर्शन किया। यह बच्चों के लिए एक अच्छा आत्मविश्वास निर्माण अभ्यास था और इसका आनंद लिया गया था जिससे उनकी खुशी का ठिकाना नहीं रहा।

**प्रकृति और हम**

अमित दाद  
कक्षा 4-ए

कितनी सुन्दर प्रकृति बनाए  
कतुओं की है यह धारा,  
मिल-जुल कर सब खड़े हैं।  
शुद्धी देने हम करते हैं।  
सब जगह होने वाली लगी,  
सूखे का बरतन है,  
हम रहते हैं प्रकृति से और  
यही हमारी शान है।  
प्रकृति से हमें मिलता है सब कुछ  
चाहे अन्न तथा या जल दो  
हमें बनाते हमें खिलाती,  
प्रकृति है ही हमें अर्पणा।



**प्रकृति का संदेश**

विद्यार्थी :- २९ (३०)  
विषय :- प्रकृति का संदेश  
विषय :- प्रकृति का संदेश

प्रकृति का संदेश  
प्रकृति का संदेश  
प्रकृति का संदेश



**प्रकृति का संदेश**

विद्यार्थी से है उज्ज्वल सीमा,  
तिनली से इतना सा,  
भयंकर की गुंजन से सीमा,  
राज मधुसूदन गाना।

तेज सिया सूरज से हमने,  
वीर से गीतल दायमा।  
दिम-दिम करते तारे की  
हम समझ गए सब गाना।

सागर में सिखलाई हमको,  
वहरी सीमा की धारा।  
समानुभूती पर्यंत से सीमा,  
हो किंवा लक्ष्य हमारा।

समय की टिक-टिक ने समझाया,  
सदा ही चलते रहना।  
गुणितल मिलनी जान पड़े,  
पर कभी न शीतल खोना।

प्रकृति के रूप-रूप में है,  
सुंदर संदेश समझा।  
इसमें है हमारे द्वारा ज्यों,  
अपना रूप दियाया।

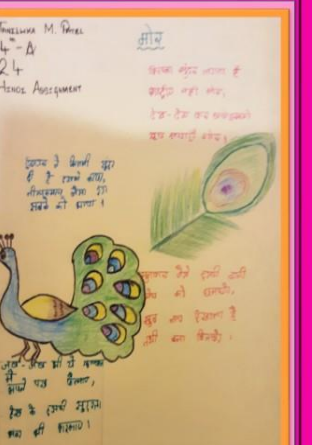


Trishulika M. Dinesh  
L- A  
24  
Hence Assignment

**श्रीम**

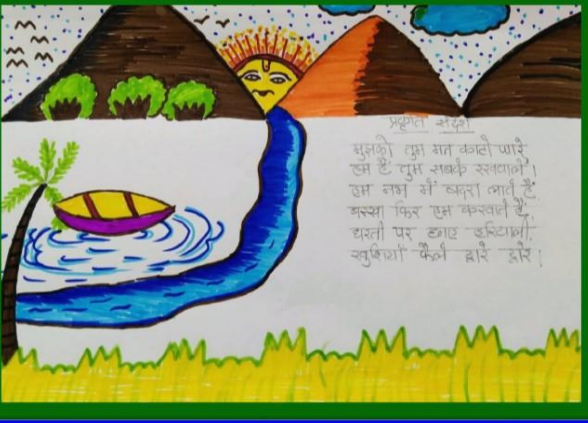
प्रकृति का संदेश  
प्रकृति का संदेश  
प्रकृति का संदेश

प्रकृति का संदेश  
प्रकृति का संदेश  
प्रकृति का संदेश



**प्रकृति का संदेश**

सुखी तुम आज कबो पारे  
हम है तुम सबके स्मरण।  
उम गहन में बहता भाव है  
मरणा फिर हम बचपन है,  
धरती पर छाए-छविदाया,  
सुखी का फैला है धारें-धारें।



**प्रकृति का संदेश**

विद्यार्थी :- अमित दाद  
कक्षा :- कक्षा 4-ए

प्रकृति का संदेश  
प्रकृति का संदेश  
प्रकृति का संदेश



नाम :- प्रकृति परमाकर  
कक्षा :- कक्षा 4-ए  
अनुक्रमांक :- १९

**प्रकृति का संदेश**

वही कक्षा सीमा उगाए  
तुम ही जो बच जाओ।  
सागर कला है लहराकर,  
जल में गहराई लाओगे।

समय से हो क्या बहती है  
उठ-उठ फिर-फिर नया नया  
मिलो कर लो आपके दिन में  
अच्छी मीठी मज्जुन उमंग।

पृथ्वी कक्षा सीमा न छोड़ो  
किन्नाही हो फिर पर भार,  
जब कदा है हमें लहना  
हम ही तुम शान संसार।

लेखक :- सौजन्यल विवेकी



**प्रकृति का संदेश**

विद्यार्थी से है उज्ज्वल सीमा,  
तिनली से इतना सा,  
भयंकर की गुंजन से सीमा,  
राज मधुसूदन गाना।

तेज सिया सूरज से हमने,  
वीर से गीतल दायमा।  
दिम-दिम करते तारे की  
हम समझ गए सब गाना।

सागर में सिखलाई हमको,  
वहरी सीमा की धारा।  
समानुभूती पर्यंत से सीमा,  
हो किंवा लक्ष्य हमारा।

समय की टिक-टिक ने समझाया,  
सदा ही चलते रहना।  
गुणितल मिलनी जान पड़े,  
पर कभी न शीतल खोना।

प्रकृति के रूप-रूप में है,  
सुंदर संदेश समझा।  
इसमें है हमारे द्वारा ज्यों,  
अपना रूप दियाया।



Gargi Rane  
Class : 4-D  
Roll No : 30  
Admission No :  
6954

**प्रकृति का संदेश**

प्रकृति ही सबको जीवन देती।  
सुखी से जीवन शर देती।  
प्रकृति से कल है मिलने।  
प्रकृति से इत है मिलने।  
अपने से किसान अन्न उगाते।  
ये सब प्रकृति के जन्म ही माने।  
जल, अग्नि, वायु, अंतरिक्ष।  
यह सब होते प्रकृति के पास।  
प्रकृति अगर कष्ट होजाय।  
पल में धूखी लाए होजाय।  
प्रकृति से जो करे छेड़-छाड़।  
वह आ जाए क्षयकर वाढ़।  
क्यों प्रकृति का सम्मान।  
प्रकृति को भावों पूर्ण भुगतान।

